१. पंपासर

– नरेश मेहता

शाल और सागौन वनों को, पार किया शबरी ने,
सुन रक्खा था नाम कभी, पंपासर का शबरी ने ।

पंपासर में बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के हैं आश्रम
ज्ञान-ध्यान, तप-आराधन के तीर्थरूप हैं आश्रम ।

प्रातःकाल हुआ ही था, सब स्नान-ध्यान में रत थे,
यज्ञ आदि के लिए बटुक जन लकड़ी बीन रहे थे ।

कोई क्यारी छाँट रहा था, सींच रहा जल कोई,
दुही जा चुकी थीं गायें सब, रँभा रही थीं कोई ।

गीले आँगन में हरिणों के, खुर उभरे पड़ते थे,
बैठ आम की डाली पर, तोते चीखे पड़ते थे ।

जलकलशी ले ऋषिकन्याएँ, पोखर आतीं-जातीं,
भीगी, एकवसन में वे सब, धुले चरण घर चलतीं ।

यज्ञ वेदियाँ सुलग चुकी थीं, वेदपाठ था जारी,
कितनी दिव्य और भव्य थी, शांति यहाँ की सारी ।

थी विशाल कितनी हरीतिमा, शोभित थीं पगवाटें,
था विराट वट वृक्ष खड़ा, फैलाए वृद्ध जटाएँ ।

दूर किसी एकांत विजन में, मुग्ध मयूरी तन्मय,
देख रही अपने प्रिय का रास नृत्य जो रसमय ।

हरसिंगार, चंपा, कनेर, कदली, केला थे फूले,
कमलों पर टूटे पड़ते थे भ्रमर सभी रस भूले ।

——०——

परिचय

जन्म : १९२२, शाजापुर (म.प्र.)
मृत्यु : २०००
परिचय : 'दूसरा सप्तक' के प्रमुख कवि के रूप में प्रसिद्ध, ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता नरेश मेहता जी उन शीर्षस्थ रचनाकारों में से हैं । जो भारतीयता की अपनी गहरी दृष्टि के लिए जाने जाते हैं । आपकी भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है, जिसमें विषयानुकूल भावपूर्ण प्रवाह है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'कितना अकेला आकाश' (यात्रा संस्मरण), 'चैत्या', 'अरण्या', 'आखिर समुद्र से तात्पर्य', 'उत्सवा', 'वनपाखी सुनो' 'प्रवाद पर्व' (कविता संग्रह), 'उत्तर कथा' (२ भागों में), 'डूबते मस्तूल', 'दो एकांत' (उपन्यास), 'शबरी', 'संशय की एक रात', (खंडकाव्य) आदि ।

पद्य संबंधी

प्रस्तुत पद्यांश 'शबरी' खंडकाव्य से लिया गया है । यहाँ पर कवि नरेश मेहता जी ने पंपा सरोवर के पास मुनियों के आश्रम, बटुक जन के क्रिया-कलाप, वहाँ के पशु-पक्षी, प्रकृति सौंदर्य आदि का बड़ा ही मनोरम वर्णन किया है ।

शब्द वाटिका

बटुक जन = छोटे-छोटे बच्चे
शाल = एक प्रकार का वृक्ष
रँभाना =गाय का आवाज करना
हरीतिमा = हरियाली, हरापन

मुहावरा

टूट पड़ना = भिड़ जाना, हमला करना

✻ सूचना के अनुसार कृतियाँ करो :-

(१) उत्तर लिखो :

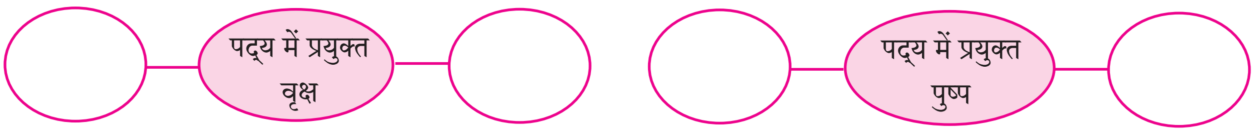

(२) एक शब्द में उत्तर लिखो :

१. पंपा सरोवर का नाम जिसने सुना है ....
२. जलकलशी ले जाने वाली ....

(३) प्रस्तुत कविता की किन्हीं चार पंक्तियों का भावार्थ लिखो ।

कल्पना पल्लवन 'वृक्ष महान दाता हैं', स्पष्ट कीजिए ।

I5PIT1

भाषा बिंदु गद्‌यपाठों में आई संज्ञाएँ तथा विशेषण ढूँढ़कर निम्न आकृतियों में भेदों सहित लिखो :

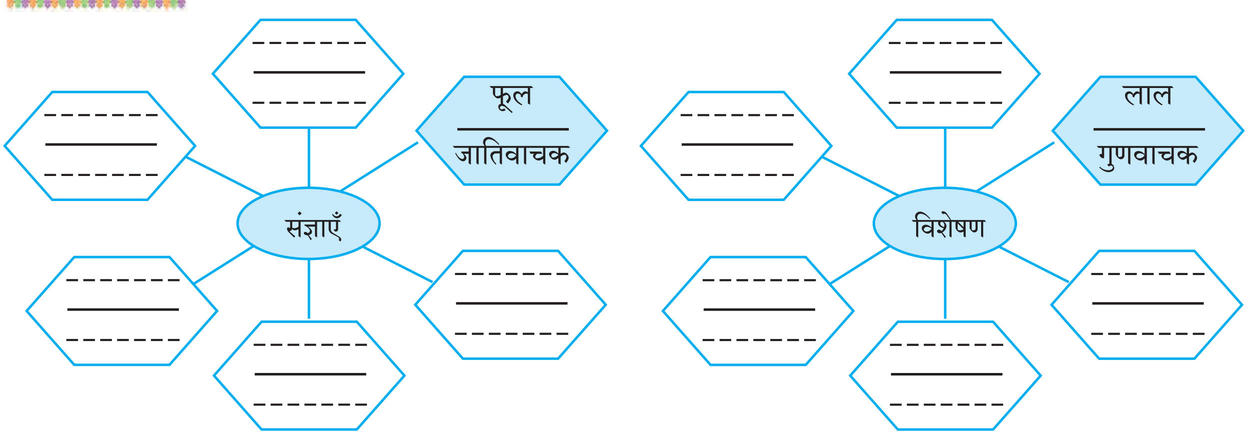

उपयोजित लेखन 'तालाब की आत्मकथा' विषय पर निबंध लिखो ।

मैंने समझा

स्वयं अध्ययन भारत की झीलों की विशेषताएँ लिखो ।